कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

कर्तार सिंह सराभा - वो शेरदिल नौजवान जो फांसी पर भी मुस्कराया

स्थान: *लुधियाना, पंजाब*

कर्तार सिंह सराभा का जन्म 1896 में पंजाब में हुआ। बचपन से ही वे होशियार और जिद्दी थे, पर सबसे गहरी बात थी — देश के लिए उनका प्यार। 15 साल की उम्र में ही उनके दिल में आज़ादी की चिंगारी भड़क उठी।

16 साल की उम्र में पढ़ाई के लिए अमेरिका गए, जहां भारतीय प्रवासियों को भी आज़ादी की कोशिशों में जुटा पाया। यहीं वे **ग़दर पार्टी** से जुड़े, जो विदेशी धरती से भारत में क्रांति लाने की तैयारी कर रही थी।

कर्तार सिंह ने निडर होकर ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ काम शुरू किया — गुप्त बैठकों में लोगों को तैयार करना, देशभक्ति से भरे लेख और कविताएं लिखना, और पर्चे छापना। 1914 में वे भारत लौटे और बगावत की योजना में जुट गए। लेकिन जल्द ही अंग्रेज़ों को खबर मिल गई और कर्तार सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत में जब उनसे अंग्रेजों के खिलाफ काम करने के लिए माफी मांगने को कहा गया तो उन्होंने गरजते हुए कहा –

"मैं माफी क्यों मांगूं? आप सभी को हमें गुलाम बनाने के लिए माफी मांगनी चाहिए। देश को आज़ाद कराना कोई जुर्म नहीं। अगर मुझे 100 ज़िंदगियां मिलतीं, तो मैं सब देश के लिए कुर्बान कर देता!"

सिर्फ़ 19 साल की उम्र में उन्हें फांसी दे दी गई। वे भारत को आज़ाद होते नहीं देख पाए, पर उनकी शहादत ने हजारों युवाओं को प्रेरित किया। **शहीद-ए-आझम भगत सिंह** उन्हें अपना गुरु मानते थे।

सबक: कर्तार सिंह की कहानी हमें सिखाती है कि उम्र कभी मायने नहीं रखती – मायने रखती है आपकी नीयत, आपका हौसला और देश के लिए आपका प्यार। हम सब इस आज़ादी के कर्ज़दार हैं – उन युवाओं के जो बिना किसी स्वार्थ के, बिना डरे, देश के लिए हंसते-हंसते बलिदान हो गए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

वीरबाला कनकलता की कहानी

स्थान: *बारंगबाड़ी, असम*

बहुत साल पहले, असम के एक छोटे से गाँव में एक बहादुर लड़की पैदा हुई – कनकलता बरुआ। उम्र सिर्फ़ 17 साल, लेकिन दिल में देश के लिए अपार प्रेम और हिम्मत। बचपन में ही माँ-बाप का साया उठ गया, दादी ने पाला। पढ़ाई में तेज, घर के कामों में मददगार, पर मन में सवाल – **"मेरा देश आज़ाद क्यों नहीं?"**

1942 में गांधी जी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' से देश भर में हलचल मच गई। असम में तय हुआ कि अंग्रेजों के थानों पर तिरंगा फहराया जाएगा। कनकलता ने ठान लिया – "अब घर में नहीं बैठूंगी।"

वह 80 मील दूर गोहपुर थाने पर तिरंगा फहराने साथियों के साथ पैदल चलीं। हाथ में तिरंगा, होंठों पर नारा – **"करो, या मरो!"** थाने के पास पुलिस ने चेतावनी दी – **"एक कदम आगे बढ़े तो गोली मार देंगे!"** कनकलता गराज के बोली – "हम सही के लिए लड़ रहे हैं। **हमारा मार्च योजना के अनुसार जारी रहेगा।** आप वही करें जो आपको करना है।"

कनकलता आगे बढ़ीं... और तभी अंग्रेजों ने उस पर गोली चला दी। गोली सीधा कनकलता की छाती में लगी। लेकिन आगे क्या हुआ जानकर हैरानी होगी – **गोलियां चलीं, कनकलता गिरीं, लेकिन उनका तिरंगा नहीं झुका।**

यह देखकर एक और युवा लड़का मुकुंद तिरंगा लेने के लिए दौड़ा। पुलिस ने उसे भी गोली मार दी। वो भी शहीद हो गया। फिर भी बाकी साथी झंडा लेकर आगे बढ़ते गए... **और अंततः, उस थाने पर तिरंगा लहराया गया।**

सबक: कनकलता आज़ादी का सूरज उगते देख नहीं सकीं। लेकिन उनके साहस और बलिदान ने हजारों युवाओं को प्रेरित किया कि वो उठें, लड़ें और देश को आज़ाद कराएं। हमारी आज़ादी उन्हीं वीरों की देन है – जो हँसते-हँसते देश पर कुर्बान हो गए। कनकलता जैसी लड़कियाँ हमें याद दिलाती हैं कि देशभक्ति के लिए उम्र नहीं, जज़्बा चाहिए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

शिरीष कुमार मेहता – तिरंगे के लिए जान देने वाला निडर लड़का

स्थान: *नंदुरबार, महाराष्ट्र*

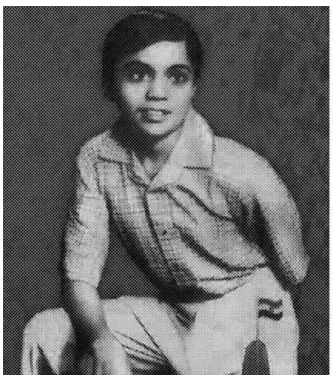

ये कहानी है एक किशोर की, जो सिर्फ़ 15 साल का था, लेकिन उसके दिल में **हिम्मत और देशभक्ति का ज्वालामुखी** धधक रहा था। उसका नाम था – **शिरीष कुमार।**

साल था **1942**, भारत छोड़ो आंदोलन पूरे देश में फैल चुका था। जगह-जगह पर लोग अंग्रेज़ों के दफ्तरों, थानों और सरकारी इमारतों से यूनियन जैक हटाकर तिरंगा फहरा रहे थे। महाराष्ट्र के नंदुरबार में भी बच्चों और युवाओं का एक बड़ा जुलूस निकला। उस जुलूस का नेतृत्व कर रहा था एक 15 साल का लड़का – **शिरीष कुमार**।

हाथ में तिरंगा लिए जैसे ही जुलूस अंग्रेज़ दफ्तर के पास पहुँचा, पुलिस ने रास्ता रोक लिया। उन्होंने चेतावनी दी – "पीछे हट जाओ वरना गोली चलेगी!" लेकिन **शिरीष डरा नहीं।** वो चिल्लाया – **“हम आज़ादी लेकर रहेंगे!”** और फिर **सीना ताने तिरंगे के साथ आगे बढ़ गया।**

धाँय! गोली चली... शिरीष कुमार वहीं गिर पड़ा – लेकिन तिरंगा उसके हाथ से नहीं छूटा। **सिर्फ़ 15 साल की उम्र में** उसने वो कर दिखाया, जो बड़े-बड़े लोग सोच भी नहीं सकते। उसके बलिदान से पूरा इलाका काँप गया। लोगों ने उसे कंधे पर उठाया और कहा – **“शिरीष कुमार अमर रहे!”**

उनकी याद में नंदुरबार में **बालशहीद शिरिष कुमार स्मारक** भी बनाया गया है।

सबक: शिरीष कुमार की कहानी हमें सिखाती है कि **देशभक्ति के लिए उम्र नहीं, साहस चाहिए।** जब कोई निडर होकर सही के लिए खड़ा होता है, तो वो इतिहास बनाता है। हम सबको आज़ादी **ऐसे ही बच्चों की कुर्बानी से** मिली है। हमें इस तिरंगे की क़ीमत को हमेशा याद रखना चाहिए।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

स्वतंत्रता सेनानी नारायण दाभाडे – एक युवा का बलिदान

स्थान: *पुणे, महाराष्ट्र*

कभी सोचा है — अगर आप स्कूल जाते वक़्त रास्ते में अंग्रेज़ों के खिलाफ नारे लगाएँ, तो क्या हो सकता है?

आज हम खुलकर बोल सकते हैं — लेकिन 1942 में, एक नारा लगाना भी जेल या मौत के बराबर था! और उस दौर में, एक कॉलेज का छात्र था — नारायण दाभाडे। न कोई बड़ा नेता, न कोई मंत्री — सिर्फ़ एक हिंदुस्तानी नौजवान, जिसकी रगों में देशभक्ति बहती थी।

ये कहानी है भारत छोड़ो आंदोलन की। जब गांधी जी ने देशवासियों से कहा — **“अब बहुत हुआ! अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही होगा!”**

उस दिन, जैसे पूरे देश में बिजली दौड़ गई। बूढ़े, जवान, और यहाँ तक कि छोटे-छोटे छात्र भी सड़कों पर उतर आए। नारायण दाभाडे भी एक ऐसा ही साहसी छात्र था — जो पुणे के गरवारे कॉलेज में पढ़ता था। लेकिन उस दिन उसने किताबें बंद कर दीं। उसने कंधे पर बस्ता नहीं — बल्कि हिम्मत उठाई। और निकल पड़ा सड़कों पर — **“अंग्रेज़ो भारत छोड़ो!”** के नारे लगाते हुए।

तिलक रोड की गलियाँ गूंज रही थीं। वो और उनके साथी निडरता से जुलूस निकाल रहे थे। तभी अंग्रेज़ों ने रास्ता रोका।

"हट जाओ!" उन्होंने कहा। लेकिन नारायण डाभाडे पीछे नहीं हटा। उसने कहा — **"हम अपने देश की आज़ादी माँग रहे हैं — और ये हमारा हक़ है!"** और तभी... धाँय! एक गोली चली! सीधी नारायण के सीने में। वो लड़खड़ाया... लेकिन गिरने से पहले — उसने एक बार फिर नारा लगाया: **"भारत माता की जय!"**

सिर्फ़ 19 साल का वो नौजवान — लेकिन हौसला ऐसा कि अंग्रेज़ भी दंग रह गए।

सबक: साहस उम्र नहीं देखता। जो सही के लिए डट जाए — वो मरकर भी अमर हो जाता है। और ये आज़ादी, जो आज हमें इतनी आसान लगती है — वो ऐसे ही बलिदानों से मिली है।

कहानियां

भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम के अनसुने नायकों की

भगत सिंह झुग्गियान

स्थान: *होशियारपुर, पंजाब*

यह एक और भगतसिंह की अत्यंत प्रेरणादायक कहानी है, जिन्होंने बहुत कम उम्र में अपने **अद्भुत साहस और देशभक्ति से अंग्रेज़ों को चकित कर दिया।** भगतसिंह झुग्गियान का जन्म पंजाब के होशियारपुर ज़िले में हुआ। वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे, लेकिन जोश और बहादुरी में वे किसी बड़े योद्धा से कम नहीं थे। एक बार स्कूल की सभा में एक अंग्रेज़ अधिकारी ने उन्हें **"ब्रिटिश हुकूमत ज़िंदाबाद"** बोलने को कहा। केवल ग्यारह साल के भगतसिंह झुग्गियान ने भरी सभा में ज़ोर से नारा लगाया — **"ब्रिटिश हुकूमत मुर्दाबाद, हिंदुस्तान ज़िंदाबाद!"**
ब्रिटिश अधिकारी ने वहीं उन्हें पीटा और यह व्यवस्था की कि उस क्षेत्र के किसी भी स्कूल में उन्हें प्रवेश न मिले।

लेकिन भगतसिंह ने हार नहीं मानी। वे स्वतंत्रता संग्राम में **गुप्त संदेशवाहक और प्रेस चालक** बन गए। अंधेरी रातों में वे **'उदारा प्रेस'** नाम की मशीन के भारी हिस्से बोरे में भरकर गुप्त क्रांतिकारी अड्डों तक पहुँचाते। कुछ दिनों बाद खाद, अनाज और रसद लेकर लौटते — उनके साहस से पुलिस भी उनसे डरने लगी!

उन्होंने केवल स्वतंत्रता संग्राम में ही योगदान नहीं दिया, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी किसानों और मज़दूरों के लिए काम करते रहे। 1945 में उन्होंने **आज़ादी कमेटी** की स्थापना की, जहाँ लोगों को शांति, देशभक्ति और सहयोग के लिए जागरूक किया जाता था। ब्रिटिश सरकार ने उन पर कड़ी कार्रवाई की, फिर भी वे डरे नहीं और पीछे नहीं हटे।

सबक: उम्र कभी मायने नहीं रखती; यदि जज़्बा और साहस भरपूर हो, तो छोटा बच्चा भी बड़ा काम कर सकता है। सच्चा स्वतंत्रता केवल विद्रोह नहीं, बल्कि सेवा, एकता और देशभक्ति भी है। ऐसे लोगों को हम स्वतंत्रता के सच्चे सैनिक कहते हैं। इनके नाम शायद बहुत मशहूर न हों, लेकिन प्रेरणा देने में ये सबसे बड़े होते हैं।